

स्तोमम् 1,184,4. यज्ञम् 7,34,6. 56,12. den Soma 9,26,3. 4. 3,31,5. प्रातर्यज्ञमग्निना हिनोत *beeilt es* 5,77,2. 7,34,5. अन्नसद्यो 8,43,19. नैनं हिन्वत्यपि वाजिनेषु *herausfordern zu* 10,71,5. घ्रातुर्म *reizen* AV. 6,101,2. ÇAT. Br. 14,1,2, 19. med. *sich in Bewegung setzen, angefeuert werden* u. s. w., *sich beeifern*: तुभ्यं हिन्वानो वंसिष्ठ गा अयः RV. 2,36,1. न हिन्वानासंस्तितिरुस्त इन्द्रम् *eilig, heftig* 1,33,8. हिन्वे अर्वा 4,7,11. हिन्वानं न वाज्युम् 8,1,19. 9,44,2. 73,2. 86,25. रथाः 10,2. 10,65,2. med. in activer Red.: धियो हिन्वाना उशितो मनीषिणः RV. 2,21,5. 7,10,1. उदाचमीरयति (०यन्ति) हिन्वते मतो (मतीः) 9,72,1. पयो हिन्वानाः 1,104,4. partic. praes.: संदष्टिरस्य हि्यानस्य दत्तोः RV. 2,4,4. अत्या हि्यानाना न कृतुभिः *concitatus* 9,13,6. इन्द्रे हि्यानः सोतुभिः 30,2. 98,2. Abgeleitete Form imperat. हिन्व in der Formel हिन्व मे गात्रा TS. 3,2,5,3. KĀTJ. ÇA. 9,12,4. हिन्व, हिन्वति DHĀTUP. 15,82 (प्रीणानार्थ); vgl. इन्, इन्व. — 2) *schleudern*: वज्रं हिन्वति सार्यकम् RV. 1,84,11. कस्मान्न हिनापि वज्रम् BHĀG. P. 6,11,19. शूलमहिनात् 8,10,55. pass.: गदा शक्रजिता जिघ्ये BHĀT. 14,36. med.: हिन्वानो वाचम् *die Stimme hinauslassend* RV. 9,84,4. — 3) *fördern, unterstützen, verhelfen zu* (dat.) RV. 1,18,4. धियो 27,11. अस्मान्नाये महे किनु 6,45,30. धनाय 8,60,5. क्रतवे 10,27,16. 9,36,3. न वा उ सोमो वज्रिनं हिनाति 7,104,13. 8,4,16. 47,6. AV. 4,8,7. — 4) *her —, hinbefördern, herbeischaffen*: सोमम् RV. 3,46,5. घ्रासिमत्तवे 8,43,29. देवेभ्यः ÇAT. Br. 3,5,1,35. — 5) = 2. क्वा *verlassen, aufgeben*: पदवीं न हिन्वति BHĀG. P. 5,1,5. यावदिदं (कालेवरं) हिनोम्यक्त् 1,9,24. कर्म हिन्वन् 7,10,11. *loswerden, sich befreien von* 10,77,32. — 6) als ungewöhnliche Form könnte hierher gehören क्यंता du. *concitantes* sc. *egros* RV. 1,116,18 und अयो नपातमग्निना क्यंताम् (क्यंताम्, wie unsre Hdschr. liest, wäre *treibet an*) TS. 1,6,22,4. der Text ist aber unsicher, wie AV. 19,42,4 zeigt. = ऐर्ष्यसंगमयितारम् Comm.

— caus. aor. अजीक्यत् P. 7,3,56. Schol. Vop. 18,1.
— desid. जिधीषति P. 7,3,56. Schol.
— intens. जेधीयते ebend.
— अय *abwerfen, sich befreien von*: कृद्गाम् BHĀG. P. 10,33,40.
— घ्रा med. *herbeischaffen* RV. 9,74,8.
— परि *hinbefördern, verbringen*: यो वा होत्रा परिहिनामि (AV. Prāt. 3,88) मेधयो RV. 7,104,6.
— प्र, प्रहिणोमि u. s. w. VS. Prāt. 3,87. AV. Prāt. 4,95. TS. Prāt. 13,12. P. 8,4,15. Vop. 8,22. 12,3. 1) *antreiben, erregen*: प्र वै देवमश्वं न वाजिनं हिणे RV. 7,7,1. हिन्वन्तस्य दीधितिं प्राधरे 9,102,8. — 2) *schleudern*: चक्रं तस्मै प्राहिणवम् MBh. 3,680. 12139. 5,7209. प्राहिणवम् 7278. 7205. HARIV. 11087 (S. 792). तस्मै महोपलम् RAGH. 15,21. BHĀG. P. 6,12,24. 8,11,30. चक्रं विक्रमसेने PAÑĀT. ed. orn. 58,9. प्राहिणीत् BHĀT. 15,121. PAÑĀT. 40,18. अशोकाय पाद्म् MĀLAV. 38,11. — 3) *herbei —, hinschaffen, liefern, Jmd Etwas zustellen, zukommen lassen*: पितृभ्यः RV. 10,16,1. ऊर्मि देवमार्दनम् 30,7. 8. प्र क्वैत 9. प्र तत्ते हिन्वा यत्ते अस्मे 95,13. यो वै वेदाश्च प्राहिणोति तस्मै ÇVETĀÇV. Up. 6,18. रथं तस्मै प्रजिघाय RAGH. 12,84. तस्मै सुवर्णादि KATHĀS. 10,100. 21,89. अस्याम्भः 23,132. 43,92. प्राप्तं प्रक्षेप्यामि 121,224. RĀĀ-TAR. 3,250. 321. BHĀG. P. 9,4,34. — 4) *absenden* (einen Boten), *wegschicken*,

vertreiben, verjagen zu Jmd (dat.), *zu — in Etwas* (acc.): कृव्यादम् RV. 10,16,9. AV. 5,22,4. 31,10. 6,130,1. 7,113,3. समुद्रम् 10,5,23. कृत्याः कर्त्रे 1,30. 19,57,3. न हूताय प्रक्षे (infim.) तस्य एषा RV. 10,109,3. ÇAT. Br. 3,2,4,3. TS. 2,2,6,5. TBR. 3,10,9,3. AIR. Br. 6,34. 36. KAUC. 75. KAUSH. Up. 2,3. तस्मात्प्रक्षेप्याम्यथ वो (पृथे) कीनः प्रजननात्स्वयम् । सदशाच्छेयो वा त्वं विद्यपत्यम् *senden* (zu einem andern Manne) MBh. 1,4676. हतान् 2,1244. 4,281. कुशलार्थं तव Jmd *absenden um sich nach deinem Wohlbefinden zu erkundigen* R. 1,17,38 (26 GORR.). चारम् KATHĀS. 16,57. 17,55. 61. 41,20. 44,172. 48,103. 57,125. 120,98. प्रक्षेप्याम्यर्चितामिमाम् *entlassen* 122,50. RĀĀ-TAR. 5,56. 302. प्राहिणाम् BHĀT. 15,104. तस्मै स्वां भार्याम् MBh. 1,4211. RAGH. 8,78. 11,49. KATHĀS. 37,101. 75,114. DAÇAK. 68,3. हतान् — अश्रुरयोस्तयोः *zu* KATHĀS. 10,195. वाराणसी प्रति ब्रह्मदत्तस्य 19,61. मां त्वं प्रति 67,28. अतिकं तस्य 8,11. पार्थ तस्य RĀĀ-TAR. 5,467. निजं गृहम् KATHĀS. 22,69. RĀĀ-TAR. 3,405. 6,35. तान्प्राहिणव यमसादनम् MBh. 3,12160. 4,821. तान्वाणाः प्राहिणवन्मसादनम् 3,12178. यातव्याय हतम् KĀM. NITIS. 12,1. यात्रायै KATHĀS. 42,83. सोमदत्तस्य बन्धाय 20,16. 29,38. विघ्नय तस्य 45,89. विन्ध्याकातारं काणभूतिमवन्तितुम् 2,3. 27,110. 43,111. योद्धुम् BHĀT. 14,1. pass. प्रक्षेपताम् KATHĀS. 101,113. — 5) *so v. a. प्रेषयति auffordern, anweisen* LĀTJ. 1,1,13. 8,3,2. पुत्रं श्वेतकेतुं प्रजिघाय याजयेति KAUSH. Up. 1,1. — 6) *med. dahinfahren*: रथा इव प्र सर्गां अक्षेपत RV. 9,22,1. — 7) hierher die Form प्रजिघ्यतु *davonlaufen*: अत एव पराङ्गति (= गच्छतु SĀJ.) AIR. Br. 8,28. — 8) = 2. क्वा *mit* प्र *verlassen, im Stich lassen*: तमपिउतम् । ते ऽकृतार्थं प्रहिणवति प्राणा रायः सुतादयः Spr. (II) 4151 (BHĀG. P.). — 9) *partic. प्रहित a) angetrieben, angefeuert*: पार्थ BHĀG. P. 3,1,9. कालं 7,2,56. दैव 8,20,14. 9,6,29. 22,16. — *b) geschleudert* AK. 2,8,2,56. H. 779. चक्रं मत्करप्रहितम् HARIV. 15746. R. 5,80,32. प्रहितास्त्रवृष्टि RAGH. 3,58. MĀRK. P. 134,45. BHĀG. P. 3,19,18. साधुषु प्रहितं तेजः प्रकृतुः कुरुते ऽशिवम् 9,4,70. वेगेन प्रहितं बाहुम् *so v. a. mit Gewalt ausgestreckt* MBh. 1,6000. प्रहितनखरेषुङ्गकेषु *so v. a. eingegraben* SĀH. D. 71,1. *geworfen, gerichtet von Augen, Blicken* MEGH. 72. RAGH. 2,27. 13,42. 15,84. BHĀG. P. 3,3,7. विचारमार्गप्रहितेन चेतसा KUMĀBAS. 5,42. — *c) hingeschafft, zugestellt, zugesandt* (von Sachen) KATHĀS. 12,192. 21,91. लेख 42,109. 124,198. माला 50,136. DAÇAK. 87,8. PAÑĀT. ed. orn. 55,7. कुशल ad MEGH. 112. — *d) ausgesandt* H. 1492. Boten u. s. w. RV. 10,165,4. AV. 2,29,4. 6,29,2. 8,2,11. 18,4,65. ÇAT. Br. 3,2,4,15. अधानं प्रहित एति 5,3,4,11. KĀTJ. ÇA. 14,5,30. 15,7,24. JĀĀN. 2,190. 8,283. MBh. 3,1801. 12,2606. 14,226. R. 2,91,42 (100,43 GORR.). 3,66,17. 5,39,8. 6,1,23. KATHĀS. 14,67. 17,12. 20,205. RĀĀ-TAR. 4,222. 338. 340. दैत्येन PRAB. 85,8. 97,10. HIT. 92,20. VET. in LA. (III) 29,16. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7,7. ÇI. 24. तव पार्थ PAÑĀT. 161,19. कर्णाय *gegen* (in einer Schlacht) MBh. 7,8292. जयाय R. 6,77,27. *fortgeschickt, fortgejagt*: वनवासाय R. 2,46,2. KATHĀS. 27,54. MĀRK. P. 114,6. — *e) hingeschickt zu* (loc.) *so v. a. mit der Sorge um — beauftragt*: अहं हि सततं गोषु भवता प्रहितः पुरा MBh. 4,69. — 10) *partic. प्रहितवत् der ausgesandt hat, st. des verbī finiti* R. 4,32,12. KATHĀS. 45,10. 48,102. — *caus. aor. प्राजीक्यत्* PAT. in MAHĀBH. lith. Ausg. 7,118, b. — *desid. vom caus. प्रजिघाययिषति ebend.* 119, a. प्र-